

विचार बिन्दु

किसी भी हालत में अपनी शक्ति पर अभिमान मत कर, यह बहरूपिया आसमान हर घड़ी हजारों रंग बदलता है। - हाफिज़

साहूकारी ब्याज आज भी बड़ी समस्या

आजादी के 78 साल होने को है पर गांवों में आज भी गैर संस्थागत स्रोत से ऋण प्राप्त करने वाले ग्रामीणों में से बहुत बड़ा प्रतिशत ऐसे ग्रामीणों का है जिन्हें 40 से 60 प्रतिशत तक की दर से ब्याज चुकाना पड़ता है। हालांकि पिछले एक दशक में बैंकिंग और संस्थागत ऋण सुविधाओं में तेजी से विस्तार हुआ है। जन धन खातों और संस्थागत ऋण के साथ ही सभी तरह के सरकारी अनुदान की राशि का सीधे खातों में हस्तांतरण से बैंकिंग सेवाएं अब गांवों के लिए दूर की बात नहीं रह गई। पर इस सबके बावजूद तात्कालिक आवश्यकता व विशेष परिस्थितियों में ग्रामीणों को ज्यादातर रिस्तेदारों, परिचितों, साहूकारों, मित्रों या फिर गैर सरकारी संस्थाओं से ऋण लेना होता है और फिर इन जगों पर जो ब्याज लिया जाता है। वह ऋणी की कमर तोड़ने के लिए प्रयाप्त है। इन हालात में प्रेमचन्द का गोदान का समय हो या आज का कोई खास अंतर देखने को नहीं मिलेगा यह आज का यथार्थ है।

नाबार्ड की हाल ही मार्च, 25 में जारी रिपोर्ट से जहां इस बात का संतोष होता है कि ग्रामीण क्षेत्र में संस्थागत ऋण प्रवाह का दायरा बढ़ा है वहीं यह भी चिंताजनक हालात सामने आये हैं कि गैरसंस्थालात स्रोतों से जरूरत के समय कर्ज प्राप्त करने वाले ग्रामीणों में से करीब साढ़े तीन फीसदी लोगों को 50 फीसदी से भी अधिक ब्याजदर से कर्ज चुकाना पड़ रहा है। इससे यह साफ हो जाता है कि एक बार गैरसंस्थागत स्रोत से कर्जदात बने तो फिर कर्ज के मकड़जाल से निकलना असंभव नहीं तो बहुत ही मुश्किल भरा होगा। नाबार्ड की रिपोर्ट को ही आधार मानकर चले तो सितंबर, 24 में जुटाये आंकड़ों के अनुसार 17.6 फीसदी लोग अपनी रुपये पैसे की तात्कालीक जरूरतों को पूरा करने के लिए गैर संस्थागत स्रोतों पर निर्भर है। हालांकि इसमें करीब साढ़े तीन फीसदी का सुधार है पहले 21.1 प्रतिशत ग्रामीण अपनी ऋण जरूरतों को पूरा करने के लिए गैर संस्थागत स्रोतों पर निर्भर थे। फिर भी हमारी ग्रामीण संस्कृति की इस खूबी की सराहना करनी पड़ेगी कि आज भी 31.7 प्रतिशत रिस्तेदार या परिचित ऐसे हैं जो दुःखदद में भागीदार बनते हैं और ऐसे समय में उपलब्ध कराये गये रुपये पैसे पर किसी तरह का ब्याज नहीं लेते। हालांकि रिस्तेदारों या परिचितों से इस तरह की रुपये पैसे की आवश्यकता कुछ समय के लिए ही होती है और समय पर लौटा दिया जाता है। यह भी नाबार्ड द्वारा जारी रिपोर्ट से ही उभर कर आया है।

दरअसल चाहे ग्रामीण हो या शहरी तात्कालीक आवश्यकताएं आ ही जाती है जिनके लिए तत्काल रुपये पैसे की आवश्यकता होती है। अन्य कोई सहारा नहीं देखकर व्यक्ति इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए रिस्तेदार, परिचित, साहूकार, दोस्त, कमीशन एजेंट या रुपये पैसे उधार देने वाले लोगों के सामने हाथ पसालते हैं। अब इनमें से एक बहुत बड़ा वर्ग पैसा भी है जो व्यक्ति की मजबूरी का फायदा उठाने में किसी तरह का गुरेज नहीं करते और हालात यहां तक हो जाते हैं कि मजबूरी का फायदा उठाते हुए 50 से 60 प्रतिशत तक ब्याज लेने में किसी तरह की हिचकिचाहट नहीं दिखाते। हालांकि ऐसे लोगों का प्रतिशत या संख्या कम है। पर इसे सिर से नकारा नहीं जा सकता। रिपोर्ट के अनुसार ऋण लेने वाले करीब 40 फीसदी ग्रामीणों को 15 प्रतिशत से 60 प्रतिशत तक के बीच में ब्याज का चुकारा करना पड़ता है।

0.9 प्रतिशत को 60 प्रतिशत या इससे अधिक तो 6.6 फीसदी को 50 प्रतिशत से अधिक की ब्याजदर पर लिए गए ऋणों का चुकारा करना पड़ता है। इससे साफ हो जाता है कि आजादी के 75

एक बात और शहरों और ग्रामीण इलाकों में कुछ लोगों या संस्थाओं द्वारा दैनिक आधार पर पैसा कलेक्शन करने और दैनिक आधार पर ही ऋण देने का कार्य किया जाता है। इस तरह के लोगों या संस्थाओं द्वारा भले ही दैनिक आधार पर दस रुपये के ग्यारह रुपये शाम को देना आसान लगता हो पर इस किश्त का चूकना और मासिक आधार पर गणना की जाये तो यह बहुत मंहगा होने के साथ ही जरूरतमंद लोगों की मजबूरी का फायदा उठाने से कम नहीं है। रोजमर्रा का काम करने वाले वेण्डर्स इस तरह की श्रेणी में आते हैं।

चाहे 40 प्रतिशत ही हो पर इनके द्वारा 20 प्रतिशत से 60 प्रतिशत की ब्याजदर से ब्याज राशि वसूलना किसी भी तरह से सभ्य समाज के लिए उचित नहीं कहा जा सकता। हालांकि देश में संस्थागत ऋण उपलब्धता बढ़ी है पर आज भी ताजा रिपोर्ट के अनुसार 17.6 प्रतिशत ग्रामीणों का साहूकारों या अन्य स्रोतों पर निर्भर रहना उचित नहीं माना जा सकता। यदि ब्याज दर 20, 30, 40 या 50 प्रतिशत होगी तो प्रेमचंद के गोदान या इसी तरह की साहूकारी व्यवस्था व आज की व्यवस्था में क्या अंतर रह जाएगा। इतना जरूर है कि रिश्तों की डोर आज भी मजबूत है और इसकी पुष्टी नाबार्ड की रिपोर्ट करती है कि ग्रामीण क्षेत्र में 31.7 प्रतिशत कर्जदार रिस्तेदारों और परिचितों पर निर्भर है और यह लोग रिश्तों का लिहाज करते हुए जरूरत के समय एक दूसरे का रुपया पैसा देकर सहयोग करते हैं और बदले में किसी तरह का ब्याज नहीं लेते। आने वाले समय में भी हमें रिश्तों की इस डोर को मजबूत बनाये रखना होगा और सरकार को आगे आकर एक सीमा से अधिक ब्याज वसूलने वाली पर सख्ती दिखानी होगी। सूदखोरी के इस मकड़ जाल को नष्ट करना ही होगा।



पंडित अनिल शर्मा

राशिफल शनिवार 12 अप्रेल, 2025

चैत्रमास शुक्ल पक्ष, पूर्णिमा तिथि, शनिवार विक्रम सम्वत् 2082, हस्त नक्षत्र दिन 6.08 तक, व्याधान योग रात्रि 840 तक, विष्टिकरण सायं 4.37तक, चन्द्रमा आज कन्या राशि में संचार करेगा।

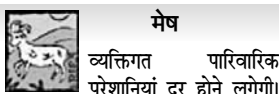
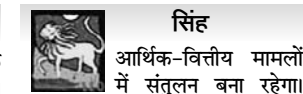
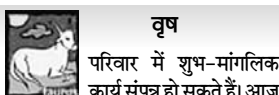
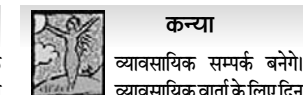
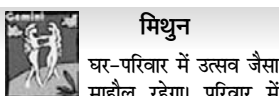
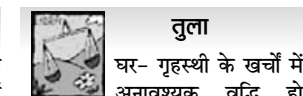
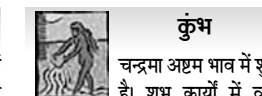
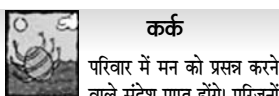
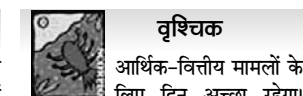
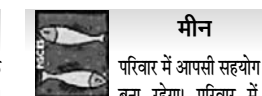
ग्रह स्थिति: – सूर्य–मीन, चन्द्रमा–कन्या, मंगल–कर्क, बुध–मीन, गुरु–वृष, शुक्र–मीन, शनि–मीन, राहु–मीन, केतु–कन्या राशि में संचार करेगा।

यमघट योग सूर्योदय से सायं 6.08 तक है। भद्रा सायं 4.37 तक रहेगी।

आज चैत्र पूर्णिमा सत्यपूर्णिमा है वैशाख स्नान आरम्भ होगा। आज श्री हनुमान जन्मोत्सव, मन्वादि, सर्वदेव दमनोत्सव है जैन ओली समाप्त होगी।

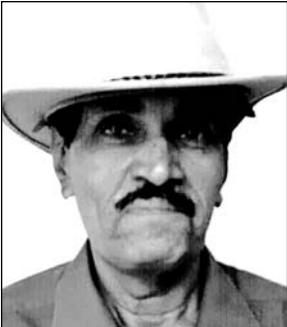
श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 7.44 से 9.14 तक, चर 12.28 से 2.02 तक, लाभ–अमृत 2.02 से 5.11 तक

राहूकाल: 9.00 से 10.30 तक सूर्योदय 5.56 सूर्यास्त 6.53

 मेष व्यक्तिगत पारिवारिक परेशानियां दूर होने लगेगी। अनहोनी की आशंका से बचा हुआ मन का भय समाप्त होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।	 सिंह आर्थिक-वित्तीय मामलों में संतुलन बना रहेगा। संभावित धन प्राप्त होगा। आर्थिक कारणाों से अटकें हुए कार्य बनने लगेगे। व्यावसायिक अनुबन्ध प्राप्त होंगे।	 धनु व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता-सुगमता से बनने लगेगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा।
 वृष परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य संपन्न हो सकते हैं। आज समय रचनात्मक कार्यों में व्यतीत होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।	 कन्या व्यावसायिक सम्पर्क बनेगे। अच्छा रहेगा। आर्थिक मामलों में प्रगति होगी। परिवार में आपसी सहयोग समन्वय बना रहेगा। धार्मिक स्थान की यात्रा सम्भव है।	 मकर व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक बातों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। घर परिवार में धार्मिक सामाजिक समारोह संपन्न हो सकते हैं।
 मिथुन घर-परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य संपन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाये बढ़ेंगी। व्यावसायिक आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।	 तुला घर- गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भाग-दौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।	 कुंभ चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्य में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।
 कर्क परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। शुभ कार्य के लिए यात्रा सम्भव है।	 वृश्चिक आर्थिक-वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। अटक हुआ धन प्राप्त हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सोच विचार हो सकता है।	 मीन परिवार में आपसी सहयोग समन्वय बना रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग समन्वय का समाधान हो सकता है। परिवार में मनोरंजन मौसमवर्ती के कार्यक्रम बन सकते हैं। व्यावसायिक बातों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

संत पीपाजी ने धर्म की अलख जगाई

12 अप्रैल को पीपा जयन्ती पर विशेष.....



मिश्रीलाल पंवार

राजस्थान के झालावाड़ से थोड़ी दूर गांगरोन गढ़ नाम का एक सम्रद्रशाही नगर था। करीब सात सौ वर्ष पूर्व वहां नरेश कड़वा राव खिंची राज करते थे। राजा कड़वा राव खिंची दानवीर तथा धर्मार्थ प्रवर्ती के कुशल साशक थे। आदि देवी माता भगवती के परम भक्त थे। साधु संतों की सेवा में सदैव तत्पर रहते। उनकी पत्नी का नाम “लक्ष्मीवती ” था। वे भी पति की भांति धार्मिक संस्कारों वाली महिला थी। एक बार रानी की तबीयत बिगड़ी। राज्य वैद्य ने जांच के बाद बताया कि महारानी जी गर्भ से है। वैद्य राज की बात सुनकर पूरे महल में खुशियां छा गई। नौ माह बाद चैत्रीय पूर्णिमा को शंख बजाने लगे। मन्दिरों ढोल, नगाड़े और घंटियां भी बज उठी। देवतागण आकाश मार्ग में पुष्पों की वर्षा करने लगे। अचानक ही महल से एक शिशु के रोने का स्वर सुनाई दिया। पता चला महारानी जी ने एक तेजस्वी पुत्र को जन्म दिया है। देवतागणों ने पुष्प वर्षा कर नवजात शिशु का स्वागत किया। सूखे कुएं और तालाब मीठे पानी से लबालब हो उठे। मुझ्झाएं पेड़ पौधे खिल उठे। पूरे गांगरोन वासियों में खुशी

की लहर दौड़ गई। घर घर दीपक जलाए गए। महाराजा ने दास दासियों को उपहार देने के लिए खजाना खोल दिया। दाईयां ने बताया कि इतना तेजस्वी और सुंदर शिशु हमने आज तक नहीं देखा। राज पंडितों ने ज्योतिष शास्त्रों का अध्ययन कर राजकुमार का नाम प्रताप सिंह रखने की सलाह दी। राज ज्योतिषी के बताए अनुसार विधि विधान से राज कुमार का नामकरण किया गया। इस मौके देश भर के क्षत्रिय राजाओं को आमंत्रित किया गया। क्षत्रिय कुल के राजाओं ने शिशु को हीरे मोती से जड़े उपहार भेंट कर शुभकामनाएं दी। ज्योतिषियों ने बताया कि राजकुमार संसार में आपका नाम रोशन करेंगे।

राजकुमार प्रताप सिंह बचपन से ही तेज तर्रार थे। उच्च राजकी शिक्षा-दीक्षा के साथ इनकी रुचि आध्यात्म की ओर भी थी। बचपन से ही साहित्य व कला प्रेमी थे। अपनी कुलदेवी में गहरी आस्था थी। वे मां भगवती से प्रत्यक्ष बातें करते थे। युद्ध कौशल में उनका कोई जवाब नहीं था। इस प्रकार धीरे-धीरे समय गुजरता रहा। राजकुमार युवा हुए तो उनके लिए रिस्ते आने लगे। अनेक राजाओं ने अपनी कन्याओं के वर के रूप में प्रतापसिंह को पसंद कर लिया।

इस प्रकार 11 राजकुमारियां उनकी जीवन संगिनी बनीं। उन्हीं दिनों युवराज प्रताप सिंह किसी समारोह में भाग लेने ठोडारायसिंह नगर गए। वहां हर तरफ प्रताप सिंह की चर्चा होने लगी। प्रताप सिंह को कोई एक बार देख लेता तो उन पर से नजरें हटने का नाम ही नहीं लेती। उनके चेहरे पर सूर्य सा तेज और चन्द्रमा जैसी शीतल आभा दिखाई देती। चलते थे तो लगता था सिंह चला आ रहा है। ठोडारायसिंह के नरेश दूंगरसिंह की एक



पुत्री थी। जिसका नाम पद्मावती था। पद्मावती धार्मिक संस्कारों वाली कन्या थी। ठोडारायसिंह के नरेश दूंगरसिंह ने प्रताप सिंह को देखा तो मन ही मन सोचने लगे कि उनकी लाडली बिटिया के लिए प्रताप सिंह से बढकर कोई दूसरा वर नहीं मिल सकता। इधर शहर भ्रमण के दौरान नगरवासियों ने राजकुमार प्रताप सिंह को देखा तो उन्हीं की चर्चा होने लगी। धीरे धीरे दासियों के द्वारा यह बात राजकुमारी पद्मावती तक पहुंच गई। दूसरे ही दिन राजकुमारी पद्मावती ने भी समारोह में प्रताप सिंह को देखा तो देखती रह गई। वह मन ही मन राजकुमार प्रताप सिंह को अपना वर मान बैठी। कुछ दिनों के बाद ठोडारायसिंह

नगर के नरेश दूंगरसिंह ने गढगांगरोन के महाराजा कड़वा राव को रिस्ते का संदेश भेजा। महाराजा कड़वा राव ने भी सुन रखा था कि ठोडारायसिंह के नरेश दूंगरसिंह की पुत्री पद्मावती अत्यंत ही सुंदर, सुशील व धर्मपरायण कन्या है। कुछ औपचारिक व्यवहार के बाद प्रताप सिंह का पद्मावती का लग्न कर दिया गया। महाराजा प्रताप सिंह अपनी सभी रानियों से समान रूप से स्नेह रखते थे। मगर सीता से विशेष स्नेह था। क्योंकि महारानी सीता धर्म परायण तथा पतिव्रता नारी थीं। उन दिनों गांगरीनगढ़ में हर तरफ खुशियां छाई हुई थीं। मगर यह खुशियां अधिक दिन तक नहीं रह सकी। एक दिन राजा कड़वाराव का

‘समय आ गया है, हम अपने फूड प्रोडक्ट्स को न्यूट्रिशनल वैल्यू के आधार पर वर्गीकृत करें’

केंद्रीय मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत को सार्वजनिक क्षेत्रों में उनके नवाचारों और योगदान के लिए डी. लिट की मानद उपाधि से नवाजा



समारोह में मेवाड़ राजपरिवार के डॉ. लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ को एमबीए की डिग्री में स्वर्णपदक प्रदान किया।

लिया है जिसका सालाना 60 करोड़ का बजट है और 10 हजार से अधिक विद्यार्थी नियमित रूप से अध्ययनरत है। उन्होंने संस्थान के सफलता का श्रेय विवि के समर्पित कार्यकर्ताओं को दिया। उन्होंने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत उन्नति नहीं, बल्कि सामाजिक उत्थान भी है इसलिए दीक्षांत समारोह के दौरान विद्यार्थियों को यह संकल्प दिलाया जाता है कि वे सत्य और न्याय के मार्ग पर चलेंगे, समाज और राष्ट्र की सेवा करेंगे, अपने ज्ञान का उपयोग सद्भाव और मानवीय मूल्यों के विकास के लिए करेंगे।

परीक्षा नियंत्रक डॉ. पारस जैन ने

बताया कि अतिथियों द्वारा पीएचडी धारकों को उपाधियां एवं विभिन्न स्नातक-स्नातकोत्तर परीक्षाओं में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को स्वर्ण पदक प्रदान किए। इस अवसर पर 97 पीएचडी धारकों को उपाधियां प्रदान की गईं जिसमें 65 छात्राएं और 101 मेधावी विद्यार्थियों को गोल्ड मेडल प्रदान किए गए, जिसमें 65 छात्राएं शामिल हैं। समारोह की शुरुआत में केंद्रीय मंत्री को एनसीसी कैडेट्स द्वारा गार्ड ऑफ ऑनर दिया।

उदयपुर सांसद मन्नालाल रावत एवं एमपीयूएटी के कुलपति प्रो. अजित कुमार कर्नाटक ने भी समारोह को

संबोधित किया। कुलाधिपति प्रो. भंवरलाल गुर्जर ने कहा कि समय के साथ शिक्षा के स्वरूप में भी बदलाव करना होगा। रोजवार देने वाली शिक्षा पर ध्यान केन्द्रित करना होगा। रजिस्ट्रार डॉ. तरुण श्रीमाली ने बताया कि समारोह के विशेष आकर्षण के रूप में केंद्रीय मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत को सार्वजनिक क्षेत्रों में उनके नवाचारों और योगदान के लिए डी. लिट की मानद उपाधि से नवाजा गया। उपाधि प्रदान करते समय सभागार तालियों से गुंज उठा। शेखावत ने इस मौके पर संस्था के सामाजिक सरोकरों और सामुदायिक कार्यो को प्रेरणादायी बताया। इस

अवसर पर मेवाड़ राजपरिवार के डॉ. लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ को एमबीए की डिग्री में स्वर्णपदक प्रदान किया गया। कर्नल विनोद कुमार बांगरवा को भी पीएचडी प्रदान की गई।

समारोह में विधायक दिप्ति मोहेश्वरी, निवृत्ति कुमारी मेवाड़, अशोक मेतवाला, डॉ. रश्मि बोहरा, भाजपा के जिला अध्यक्ष गजपाल सिंह राठौड़, पूर्व विधायक बी. एल. चौधरी, रजिस्ट्रार डॉ. तरुण श्रीमाली, परीक्षा नियंत्रक डॉ. पारस जैन, डॉ. युवराज सिंह राठौड़, वरिष्ठ भाजपा कार्यकर्ता प्रमोद सामर, पारससिंघवी, कुलदीप सिंह, डॉ. सपना श्रीमाली, सोम जारोली, प्रतीक वर्मा, अनिल हरकावत, अजय डांगी सहित विद्यापीठ के डॉन, डायरेक्टर सहित शहर कि गणमान्य नागरिक और विद्यार्थी मौजूद थे।

तेज आंधी ने पाटन कस्बे और आसपास के इलाकों में तबाही मचाई, सैकड़ों पेड़ गिरे



पाटन सहित आसपास में तेज रफ्तार हवाओं ने सैकड़ों पेड़ों को धराशायी कर दिया।

पोल और तारों की मरम्मत का काम शुरू कर दिया है, परंतु देर शाम तक अधिकांश क्षेत्रों में बिजली आपूर्ति बहाल नहीं हो पाई थी। स्थानीय प्रशासन ने आमजन से अपील की है कि वे खराब मौसम के दौरान सतर्क रहें और बिजली के टूटे तारों व पेड़ों के पास जाने से बचें।

हनुमानगढ़ में मेघ गर्जन के साथ बारिश हुई

हनुमानगढ़, (निंसे)। यहां शुक्रवार को नए पश्चिमी विक्षोभ के प्रभाव से

मौसम में अचानक बदलाव आया। सुबह से चल रही हवाओं के कारण लोगों को गर्मी का कम एहसास हुआ। दोपहर में आसमान में बादल छाए और मेघगर्जन के साथ तेज हवाएं चलीं। हल्की बारिश ने लोगों को गर्मी से राहत दी।

तेज हवाओं के कारण शहरी और

अचानक ही निधन हो गया। हर तरफ मातम छा गया। उस समय राजकुमार प्रताप सिंह की उम्र मात्र 20 वर्ष की थी। सभी राजदरबारियों ने सभा कर जेष्ठ पुत्र प्रताप सिंह के राज्याभिषेक करने का निर्णय ले लिया। महाराजा कड़वा राव के देहांत के बाद संवत् 1400 में युवराज प्रताप सिंह का गांगरोन के राजा के रूप में राज्याभिषेक हुआ। राजपाठ संभालने के कुछ ही समय में उनकी एक कुशल शासक के रूप में पहचान बन गई। उनके राज काल में गांगरोन किला एक समृद्ध रियासत बन चुका था। इधर मालवा के मुस्लिम शासकों की बुरी नजर इस पर पड़ी। वे गांगरोनगढ़ पर फतह करने की योजनाएं बनाने लगे।

मुस्लिम शासकों ने गांगरोन जीतने की मंशा से हमला किया तो प्रताप सिंह ने उनकी सेना को मुंह तोड़ जवाब ही नहीं दिया बल्कि खदेड़ खदेड़ कर मारा। फिरोजशाह तुगलक, मलिक जर्दफिरोज व लल्लन पठान जैसे योद्धाओं को पराजित कर पूरे भारतवर्ष में अपनी वीरता का लोहा मनवाया। बाद में मुस्लिम शासकों के मन में प्रताप सिंह के नाम का ऐसा खौफ बैठा कि पलट कर गांगरोन की तरफ देखा तक नहीं। कुछ समय बाद महाराजा प्रताप सिंह ने संसारिक राजपाठ तथा संसारिक मोह-माया का त्याग कर दिया। पति के साथ ही सबसे छोटी रानी पद्मावती ने भी संन्यास ले लिया। जगद्गुरु रामानंदाचार्य ने प्रताप सिंह को पीपा तथा पद्मावती को सीता नाम प्रदान किया। जगद्गुरु रामानंदाचार्य से दीक्षा लेकर दोनों जगत कल्याण के लिए एडिशन पर निकल पड़े। भारतभर का भ्रमण करते लोगों में धर्म की अलख जगाई।

-मिश्रीलाल पंवार, जोधपुर

- जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय की ओर से 20वां दीक्षांत समारोह आयोजित
- समारोह में 101 मेधावियों को स्वर्ण पदक और 97 को पीएचडी उपाधि प्रदान की

अवसर पर मेवाड़ राजपरिवार के डॉ. लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ को एमबीए की डिग्री में स्वर्णपदक प्रदान किया गया। कर्नल विनोद कुमार बांगरवा को भी पीएचडी प्रदान की गई।

समारोह में विधायक दिप्ति मोहेश्वरी, निवृत्ति कुमारी मेवाड़, अशोक मेतवाला, डॉ. रश्मि बोहरा, भाजपा के जिला अध्यक्ष गजपाल सिंह राठौड़, पूर्व विधायक बी. एल. चौधरी, रजिस्ट्रार डॉ. तरुण श्रीमाली, परीक्षा नियंत्रक डॉ. पारस जैन, डॉ. युवराज सिंह राठौड़, वरिष्ठ भाजपा कार्यकर्ता प्रमोद सामर, पारससिंघवी, कुलदीप सिंह, डॉ. सपना श्रीमाली, सोम जारोली, प्रतीक वर्मा, अनिल हरकावत, अजय डांगी सहित विद्यापीठ के डॉन, डायरेक्टर सहित शहर कि गणमान्य नागरिक और विद्यार्थी मौजूद थे।

- कई घरों और दुकानों की छतों से टिनशेड उड़कर दूर जा गिरे

ग्रामीण क्षेत्रों में कई घंटों तक बिजली आपूर्ति बाधित रही।

हनुमानगढ़, संगरिया और पीलीबंगा क्षेत्र में गर्जना के साथ हल्की बारिश और बूंदबांदी हुई। इससे मौसम सुहावना हो गया। पिछले एक सप्ताह से जिले में लगातार गर्मी का प्रकोप बना हुआ था। इससे विशेषकर दोपहिया वाहन सवारों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा था। मौसम विज्ञान केंद्र जयपुर के अनुसार नए पश्चिमी विक्षोभ के प्रभाव से आगले 1-2 दिन तक कुछ क्षेत्रों में दोपहर बाद मेघ गर्जन और आंधी-बारिश की संभावना है। विभाग ने चेतावनी दी है कि 14 अप्रैल को पश्चिमी विक्षोभ का प्रभाव समाप्त हो जाएगा। इसके बाद एक बार फिर से हीट वेव की स्थिति बन सकती है।